त्योहारों का भी मनुष्य के जीवन में अपना विशेष महत्व है। शिवरात्रि का महत्व अन्य सभी त्योहारों से विशेष है। शिवरात्रि विश्व के कल्याण का पर्व है। यह परमपिता शिव द्वारा संचालित एक ऐसे अहिंसायुक्त आंदोलन की याद दिलाता है जो उन्होंने काम-क्रोधादि विकारों की गुलामी से स्वतंत्रता दिलाने के लिए मानवों द्वारा कराया। यह त्योहार एक ऐसी कल्याणकारी आध्यात्मिक क्रांति की याद दिलाता है जिसके द्वारा समूचे विश्व का कायाकल्प हो गया था और अब पुन: हो रहा है। अत: इस त्योहार के आने पर हम ज्ञान के झरोखे से विशेष तौर पर झांक कर देखते हैं कि हमने अपना कितना कल्याण किया है और अन्य कितने लोगों का कल्याण करने के निमित्त बने हैं। यह त्योहार हमें शिव बाबा के गुणों से, अपने गुणों की तुलना करने पर विवश करता है ताकि हम देखें कि हम शिव-वत्स बाबा के गुणों के अनुरूप गुण धारण कर रहे हैं या नहीं। शिवरात्रि के अवसर पर भक्त लोग तो शिव बाबा की महिमा के गीत गाते हैं परन्तु हमें अन्तर्मुखी होकर यह देखना है कि हम स्वयं गायन और महिमा के योग्य महान बन रहे हैं या नहीं।

नये जीवन का नया वर्ष

यदि हम यह कहें कि हमारे आध्यात्मिक जीवन का हर वर्ष शिवरात्रि से शुरू होता है तो सही होगा। दूसरे शब्दों में शिवरात्रि का त्योहार हमारे पुरुषार्थ-पथ पर मील-चिह्न है। अत: शिवरात्रि के अवसर पर हमें लगता है कि हमारे आध्यात्मिक पुरुषार्थ के इतने वर्ष बीत गये और अब एक और वर्ष कम हो गया। अब शेष थोड़ा ही समय रह गया है। अत: हम संकल्प को दृढ़कर अमुक-अमुक कमजोरी को मिटाने में लग जाते हैं तथा नये वर्ष के लिए ज्ञान, योग, दिव्य गुणों की धारणा तथा ईश्वरीय सेवा सम्बन्धी नया कार्यक्रम बनाते हैं।

फिर, इस वर्ष तो हमें विशेष तौर पर 'सम्पूर्णता' के समीप जाने के लिए कोई योजना अपने सामने रखनी चाहिए। जैसे भारत सरकार ने एक बीस जोड़ पांच बराबर पच्चीस सूत्री कार्यक्रम अपने सामने रखकर उसके अनुरूप कार्य किया था, वैसे ही हम भी सोलह कला सम्पूर्ण बनने के लिए कोई योजना बना सकते हैं।

मन की सच्चाई, बुद्धि की सफाई - भारत सरकार के कार्यक्रम में यह भी शामिल था कि हमारे नगरों और हमारे ग्रामों में सफाई हो। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी स्वच्छता अथवा सफाई वर्ष मनाया था। अब हमें भी चाहिए कि हम इस वर्ष में अपनी आदत को पूर्ण पवित्र बनाने का प्रयास करें।

मन साफ करो औरों को माफ करो - पच्चीस सूत्री कार्यक्रम में एक सूत्र यह था कि पूंजीपति अथवा बनिये जिन लोगों को ब्याज पर धन देते रहे हैं, वे अब उनसे धन या ब्याज की मांग नहीं कर सकेंगे। बहुत से लोगों पर ऋण का ब्याज ही इतना हो गया था कि उसे देना उनके लिए संभव नहीं था। इस प्रकार, अब उनका ऋण माफ हो जाने से अब वे आगे बढ़ सकेंगे। उसी प्रकार हमें भी अपने आध्यात्मिक पुरुषार्थ में अब यह नारा अपनाना चाहिए कि - ''मन साफ करो, औरों को माफ करो''। यदि कोई हमारी निंदा करता है या हमारा विरोध करके अपने ऊपर पाप का बोझ या कर्मों का ऋण चढ़ाता है तो हमें उसे माफ कर देना चाहिए। हमें उससे घृणा नहीं करनी चाहिए, न ही उससे अपने मन को मैला करना चाहिए।

शिवरात्रि एक आध्यात्मिक क्रांति

-ब्र.कु.गंगाधर

माया की गुलामी को सदा के लिए सलामी - हम मनुष्यात्माएं जन्म-जन्मांतर से माया की अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि विकारों के गुलाम बने रहे हैं। इन्हीं विकारों के ऋण से छुटकारे के लिए 'मुक्ति वर्ष' मनाकर इनसे पूर्णत: मुक्ति प्राप्त कर सम्पूर्ण बनने का पूरा पुरुषार्थ करना है।

जमा करो और दान दो - सरकार ने गरीब लोगों के लिए यह भी व्यवस्था की थी कि वे बैंकों से सहायता ले सकें। पहले टैक्सी या स्कूटर के ड्राइवर तो सारी आयु ड्राइवर ही रहते थे और टैक्सी तथा स्कूटर के मालिक प्राय: पूंजी वाले ही होते थे। किसान भी पैसे न होने के कारण खेती ही करते रहते थे, उनके पास ट्रैक्टर या बीजों के लिए धन नहीं होता था। अब इन सभी की उन्नति के लिए सरकार ने इन्हें सहायता दिलाने की स्कीम लागू की है। हमें भी चाहिए कि हम अपने ज्ञान, योग, दिव्य गुणों की धारणा का बैंक बैलेंस बढ़ायें और हमारी क्लास में जिस-किसी में इनमें से किसी की कमी हो उसे सहयोग दें जिससे वह भी अपने पांव पर खड़ा हो सके। अत: हम आस-पास के केंद्रों में भी सहयोग दें।

रूठना नहीं, रूठाना नहीं - आपातकालीन स्थिति में तो विशेष तौर से सरकार ने स्ट्राइक पर कड़ी पाबंदी लगा दी थी क्योंकि इससे देश को काफी हानि होती है। अब शिव बाबा ने भी तो हमें यह बताया हुआ है कि अब सारे विश्व के लिए वर्तमान परिस्थिति 'आपात स्थिति' है। अब इसमें कोई भी तोड़फोड़ वाले संकल्प नहीं करने हैं। कोई भी स्ट्राइक नहीं करनी अर्थात् न स्वयं दु:ख पाना है, न दूसरों को दु:खी करना है, न रूठना है, न किसी को अपने से या शिव बाबा से रूठाने वाली बात कहनी है। सभी से 'दूध और चीनी' की तरह मिलकर रहना है। वैर-विरोध को मिटाना है और भाई-भाई की तरह स्नेह से चलना है।

'स्ट्राईक' का अर्थ 'कार्य बंद करना' भी है। परन्तु हमें तो अब प्यारे शिव बाबा ने विश्व के कल्याण का श्रेष्ठ कार्य दे दिया है। बाबा ने समझाया है कि इस कार्य में तो 'आराम हराम है'। दूसरों के कल्याण के कार्य के लिए 'न' कहना ही नास्तिक बनना और एक प्रकार से स्ट्राईक करना है। अब तो हमें कल्याणकारी शिव बाबा की हरेक आज्ञा के लिए 'जी हाँ' ही कहना है, कम्पलेंट न करके कम्पलीट बनने का पुरुषार्थ करना है।

एकनामी और इकनामी अथवा त्याग और तपस्या - सरकार ने नये आर्थिक कार्यक्रम में मुद्रास्फीति रोकने सम्बन्धी नीति में एक कार्यक्रम यह भी था कि सरकार अनावश्यक खर्च कम करेगी। गोया इकोनामी (बचत) द्वारा भी सरकार आर्थिक दशा को सुधारेगी। हमारे आर्थिक पुरुषार्थ के लिए शिव बाबा ने हमें एकनामी और इकानोमी के लिए शिक्षा दी है। बाबा ने कहा है कि साधनों की मांग छोड़कर साधना करो। एक शिव बाबा का नाम लो अर्थात् 'एक-नामी' बनो और संकल्प, बोल तथा धन का कम से कम प्रयोग करके बड़े से बड़ा कार्य करो। एकनामी का भावार्थ है - तपस्वी बनो और इकनोमी करने का अर्थ है - त्याग करो। 'हमारे नये विश्व की नींव त्याग और तपस्या पर खड़ी है'। हमें अपना नाम या यश नहीं चाहिए, हमें तो नाम शिव बाबा का ही बाला करना है, स्वयं तो हम साधारण हैं। हमें जो सफलता मिलती है, उसका श्रेय तो शिव बाबा को है, क्योंकि सभी वरदान तो उन्होंने ही दिये हैं और वे ही हमें मार्गप्रदर्शना भी देते हैं। अत: हमें सभी 'वाह-वाह' करने वालों को कहना है कि हमारे कार्य की बड़ाई नहीं है, बड़ाई शिव बाबा की है। पुनश्च, हमने अपने लिए सुविधा, धन इत्यादि का कम से कम प्रयोग करके लोकसेवा में ही उसे लगाना है और वह भी बचत अर्थात् किफायत के तरीके से। अत: हमने 'एक-नामी बनो और इकनामी करो' की नीति अपनानी है।

लाइट और माईट में वृद्धि - सरकारी परियोजना में एक सूत्र 1600 मेगावाट और अधिक बिजली पैदा करने के बारे

-शेष भाग 4 पर

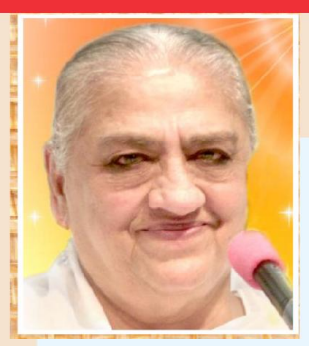

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

सर्व प्राप्ति से सम्पन्न आत्मा ही संतुष्टमणी है

जैसे बाबा हमको संतुष्टमणि के रूप में देखता है ऐसे हम भी अपने से पूछें कि हम संतुष्टमणी हैं? क्योंकि संतुष्टमणी वही बन सकता है, संतुष्ट वही रह सकता है जिसको सर्व प्राप्तियां हों। अगर कोई भी अप्राप्ति होगी तो संतुष्टता नहीं होगी। बाप दादा दोनों को देखो, बच्चों को दृष्टि देते, मुस्कराते रहते हैं तो हम भी हरेक अपने से पूछें कि मेरी सूरत बाबा जैसी है? अभी सर्विस ऐसी करो जो चलन और चेहरे से पता पड़े कि इसको कुछ मिला है। शक्ल बोले हमको कुछ मिला है। तो हमको क्या मिला है, भगवान ही हमारा हो गया - यह निश्चय है ना। भगवान किसका है! वो हमारा बाप है, सब कुछ है। तो हमारे चेहरे पर कितनी खुशी होनी चाहिए! क्योंकि हमारे जैसा खुशनसीब कोई नहीं। जब भगवान बाप भी हो, शिक्षक भी हो, सतगुरु भी हो। भगत बिचारे कितना ढूंढते रहते हैं। अभी कितना दु:ख बढ़ रहा है। जापान की तो बात सुनी। बाबा जो कहता है अचानक पेपर आयेगा। हमलोग सोचते हैं आयेगा तो देख लेंगे। लेकिन आ गया तो देखा ना! और देखो कहा हुआ है कि भट्ठी में चारों ओर आग लगी फिर भी बिल्ली के जो बच्चे थे वो सेफ रहे। तो अभी भी देखो जापान में सभी सेंटर्स से फोन आया कि हम बिल्कुल सेफ हैं। बाबा की मुरली चली थी कि रहमदिल, दाता बन करके हर एक दु:खियों को शांति की, शक्ति की, खुशी की किरणें दो। तो उन्होंने लिखा है कि हमको मधुबन से और अपने सेंटरों से बहुत मदद मिल रही है। हम भी आपस में सब मिलते हैं, योग करते हैं, आते-जाते भी हैं।

तो ऐसे ही बाबा कहते हैं जो संतुष्टमणी होंगे वो औरों को भी संतुष्ट करेंगे। स्वयं, बाप और परिवार तो हरेक अपने से पूछे और चेक करें कि मैं संतुष्टमणी हूँ? यह नहीं कि मैं तो अपने से संतुष्ट हूँ, वो अभिमान हो जाता है। लेकिन परिवार प्रुफ है मैं संतुष्टमणी हूँ, मेरे में सर्व प्राप्तियां है इसलिए बाबा कहते बच्चे, अब संस्कार मिलन के रास की डेट फिक्स करो। जो पुराने संस्कार बहुत जन्मों के ईर्ष्या, हषद, क्रोध, लोभ के हैं वो सुखी बनने नहीं देते। रास करना माना हाथ में हाथ मिलाके डांस करना, तो संस्कार मिलन की रास माना एक दो में संस्कार मिल जायें, संस्कार नहीं मिलते हैं तो माना चारों सबजेक्ट में से कोई न कोई सबजेक्ट में कमी है, धारणा में फर्क है। हमें चारों में परफेक्ट होना है। ऐसे नहीं ज्ञान तो मेरे में है, घण्टा भी सुना सकती हूँ, कैसी भी टॉपिक पर बोल सकती हूँ वो तो ठीक है, है तो अच्छा है लेकिन चार ही सबजेक्ट मेरे में हैं? अगर चारों ही सबजेक्ट हैं तो मेरा संस्कार मिलन जरूर होगा, संस्कार मिलाने का भी हमारे में ज्ञान होगा जरूर।

परिवार में भिन्न-भिन्न संस्कार तो हैं, किसी को क्रोध बहुत जल्दी आ जाता है। क्या हम कहेंगे कि यह क्रोध करती है इसलिए संस्कार नहीं मिलते? परिवार में अगर कोई कमजोर होता है, गिरा हुआ होता है तो उसको लात लगाके जायेंगे क्या? सहारा देंगे ना! तो इसी रीति से बाबा कहते हैं संस्कार मिलन की रास करो। अभी बाबा यही देखने चाहता है। जब संस्कार मिलन हो जायेगा तब हम अपने घर चलेंगे और अपने राज्य में आयेंगे।

तो बाबा जो कहता है वो हमको करना है। लेकिन अगर कोई बहुत कड़ा हिसाब-किताब है और आप नहीं कर सकते तो भी वरदान तो ले सकते हो ना! तो रोज वरदान लो। अमृतवेले बाबा वरदान देता है वो लेंगे तो मेहनत से छूट जायेंगे लेकिन वरदान लेने की भी हिम्मत चाहिए। बाबा रहम करता है, कोई दिल से माफी मांगे तो बाबा माफ कर देगा लेकिन माफी लेकर फिर वही करता रहे तो और भी पाप चढ़ता है।

तो अभी बाबा की एक आश है सभी बच्चे मेरे समान बन जायें, अभी यह आश बाबा की रही हुई है। जिससे हम सबका बहुत प्यार है उस प्यार वाले की यही आश रही हुई है, एक तो कहता है बिन्दु बनो, बिन्दु देखो और बिन्दु लगाओ। ऐसे नहीं अचानक कोई बात हो तो कहो यह क्या? जो होना था वो हो रहा है हमको साक्षी होकर देखना है। क्वेश्चन मार्क तो क्या आश्चर्य की मात्रा भी न आये।

जो ज्ञानी तू आत्मा है उसको कोई भी बात जैसे एक मनोरंजन, कार्टून शो लगेगी। लेकिन जिसे ड्रामा का ज्ञान नहीं है वह दु:ख में दु:खी, सुख में सुखी होते रहेंगे और ड्रामा का ज्ञान है, तो बुद्धि में आयेगा कि यह बात तो हमने कई बार क्रास की है, अनुभव किया है, तो अनुभव की हुई बात में कभी घबराहट नहीं होती है। तो ड्रामा का ज्ञान भी बहुत जरूरी है। कभी-कभी कोई दिलशिकस्त हो जाते हैं, ऐसा होगा, यह भी करना पड़ेगा... सोचते हैं तो मुश्किल लगता है। लेकिन बाबा कहते हैं बच्चे कभी दिलशिकस्त नहीं होना, सदा दिलखुश वही होगा जो चारों ही सबजेक्ट पर ध्यान देगा।

बाबा की हर मुरली में चार सबजेक्ट आते हैं, जब भी आपको कोई समस्या आती है, आपका कोई प्रश्न है, उसका उत्तर चाहिए या समाधान चाहिए तो आप कोई भी मुरली ले करके पढ़ लो। जैसे ग्रंथ के लिए कहते हैं पेज नहीं देखो, कोई भी पेज खोलो आपको उत्तर मिल जायेगा। तो बाबा की एक-एक मुरली ऐसी है जिसमें पूरा सार आ जाता है इसलिए मूंझो नहीं क्या करें! मुरली पर ध्यान दो। हर एक ब्राह्मण का प्यार मुरली से जरूर होना चाहिए, बाबा परमधाम से मुरली सुनाने आता है तो हमें मुरली जरूर सुनना चाहिए।